श्री शंकरमठम् संस्कृत श्लोक पठण स्पर्धा (2024)

Std 8th, 9th and 10th

।। महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम् ।।

अयि गिरिनदिनि नंदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नंदनुते
गिरिवरविंध्य शिरोऽधि निवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति है शितिकंठ कुटुंबिनि भूरिकुटुंबिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१।।

सुरवरवर्षिणि दुर्धरघर्षिणि दुर्मुख मर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिंधुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। २ ।।

अयि जगदंब मदंब कदंब वनप्रियवासिनि हासरते
शिखरि शिरोमणि तुंग हिमालयशृंगनिजालय मध्यगते ।
मधुमधुरे मधुकैटभ गंजिनि कैटभ भंजिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।३।।

अयि शतखंड विखंडि तरूंड वितुंडित शुंड गजाधिपते
रिपुगजगंड विदारण चंड पराक्रमशुंड मृगाधिपते ।
निजभुजदंड निपातितखंड विपातितमुंडभटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।४।।

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धर निर्जर शक्तिभृते
चतुर विचार पुरीण महाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते ।
दुरितदुरीह दुराशय दुर्मति दानवदूत कृतांतमते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।५।।

अयि शरणागत वैरिवधूवर बीरवराभय दायकरे
त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि शिरोधिकृतामल शूलकरे ।
दुमिदुमितामर दुंदुभिनाद महोमुखरीकृत तिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। ६ ।।
अयि निजहुंकृति मात्रनिराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते ।
शिव शिव शुंभ निशुंभ महाहव तर्पित भूत पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। ७ ।।
धनुरनुसंग रणक्षणसंग परिस्फुरदंग नटत्कटके
कनक पिशंग पृषत्कनिषंगरसद्भटशृंग हतावटुके ।
कृतचतुरंग बलक्षितिरंग घटद्बहुरंग रट्द्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। ८ ।।
सुरललना ततधेपि तथेवि कृताभिनबीदर नृत्यरते
कृत कुकुमः फुकुथो गहदादिकताल कुतूहल गानरते ।
धुयुफुट धुक्कुट पिंघिमित ध्वनि धीर मृदंग निनादरले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। ९ ।।
जय जय जप्यजये जय शब्द परस्तुति तत्पर विश्वनुते
भण भणभिजिमि सिंकृतनूपुर सिंजितमोहित भूतपते ।
नटितनटार्थ नटीनटनायक माटितनाट्य सुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। १० ।।
अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कांतियुते
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वकुत्रवृते ।
सुनयनविभ्रमर अमर भ्रमर अमर अमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। ११ ।।

सहितमहाहव मल्लमतल्लिक मल्लितरल्लक मल्लरते
विरचितयस्लिक पल्लिकमल्लिक मिल्लिकमित्तिक बर्गवृते
सितकृत्पुल्लि समुल्लसितारुण तल्लज पल्लव सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। १२ ।।

अविरल गंड गलन्मदमेदुर मत्त मतंगज राजपते
त्रिभुवन भूषण भूत कलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते ।
अयि सुदतीजन लालस मानस मोहन मन्मथ राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। १३ ।।

कमलदलामल कोमलकांति कलाकलितामल भाललते
सकल विलास कलानिलय क्रम केलिचलत्कल हंसकुले ।
अलिकुल संकुल कुवलय मंडल मौलिमिलद् मकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। १४ ।।

करमुरलीरववीजितकूजित लज्जितकोकिल मंजुमते
मिलित पुलिंद मनोहर गुंजित रंजित शैल निकुंजगते ।
निजगुण भूत महाशबरीगण सद्गुणसंभृत केलितले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। १५ ।।

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूख तिरस्कृत चंद्ररूचे
प्रणतसुराऽसुर मौलिमणि स्फुरदंशुलसन्नख चंद्ररुचे ।
जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुंजर कुंभकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। १६ ।।

विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुसुते ।
सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।। १७ ।।